ब्र. कु. मुन्नी दीदी

ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त प्रमुख

आपका लौकिक जन्म 15 अक्टूबर, 1950 में कोलकाता के एक धार्मिक सम्पन्न परिवार में हुआ। आपका लौकिक नाम लक्ष्मी है परन्तु बाल्यकाल से सभी प्यार से आपको 'मुन्नी' के नाम से पुकारते हैं। इस प्रकार आपकी यही पहचान बन गई। आप सन् 1959 में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सम्पर्क में आईं। आपने परमपिता परमात्मा को पहचान कर उनकी शिक्षाओं- ज्ञान, योग, धारणा और सेवा के महत्व को जाना। तत्पश्चात् आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन कर अपना सम्पूर्ण जीवन ईश्वरीय सेवाओं में लगाया।

प्रारम्भिक समय में आपको संस्था के साकार संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा और आदि देवी मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती की पालना का परम सौभाग्य मिला। सन् 1969 में ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के पश्चात् संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि बनीं। उसी वर्ष माउण्ट आबू में कन्याओं के लिए विशेष टीचर्स ट्रेनिंग कार्यक्रम के प्रथम ग्रुप में आपने विशेष ट्रेनिंग ली। तत्पश्चात् आप मधुबन में ही अपनी सेवायें देने लगीं। **सेवायें करते समय दादी प्रकाशमणि और दीदी मनमोहिनी ने आपको विशेष पालना दीं और अपने पास सेवा में रख लिया।**

आपने ईश्वरीय सेवाओं में अथक होकर वफादारी, आज्ञाकारी, ईमानदारी और विशाल बुद्धि का परिचय दिया। फलस्वरूप आपको वरिष्ठ दादियां, सभी दादा और ईश्वरीय परिवार का स्नेह, सहयोग और दुआयें मिलीं। **यज्ञ की सेवाओं में दादियों की सहयोगी बनकर निश्चिंत, निर्भय, निरंहकारी और निर्माणचित्त होने के कारण आपको विशिष्ट जिम्मेदारियाँ मिलीं।** आपने प्रशासन के कार्यो में सदा कुशलता दिखाई और यज्ञ वत्सों में समभाव, क्षमाभाव, प्रेमभाव एवं सद्भावना की आदर्श बनीं। आपने दादी प्रकाशमणि के साथ देश-विदेश में सभी प्रमुख स्थानों का भ्रमण भी किया। आपको शुरू से ही यज्ञ की निमित्त आदरणीय दीदी मनमोहिनी एवं दादी प्रकाशमणी के साथ रहकर सेवायें करने का परम सौभाग्य मिला। आपने अथक बनकर यज्ञ की हर प्रकार की सेवा में अपना योगदान दिया। आपका संस्था की मुख्य प्रशासिका आदरणीय दादी प्रकाशमणि से अति स्नेह रहा, आपने उनके सान्धिय में रहकर प्रशासन की सर्व कलाएँ सीखीं।

आपने दादी का पूरा ध्यान देते हुए उनकी सेवा और सम्भाल की जिससे अनेक ईश्वरीय सेवाओं का भाग्य प्राप्त हुआ। उनकी विशेषताओं को अपने जीवन में उतारा इसलिए आप सभी ब्रह्मावत्सों के लिए सच्चाई-सफाई का

उदाहरणमूर्त हैं। आप यज्ञ की हर छोटी बड़ी चीज़ का ध्यान रखते हुए सबको सन्तुष्ट करते सदा प्रसन्न भाव से अपनी अथक सेवायें दे रही हैं।

आपने साकार बाबा, मम्मा, दीदी तथा दादी की जो पालना ली है, उसका पूरा रिटर्न अपनी दूरदर्शिता, तीक्ष्ण बुद्धि से, अथक सेवा भावना से यज्ञ की पूरी सम्भाल कर उसे आगे बढ़ाने वा भरपूर रखने में अपना सम्पूर्ण योगदान दे रहीं हैं। आपके अंदर यज्ञ के हर कार्य को सुचारू रूप से करने और कराने की अद्भुत कला है। आप एक कुशल प्रशासक, सलाहाकार एवं व्यवस्थापक हैं। **आपमें बड़े से बड़े कार्यक्रम को व्यवस्थित करने की अद्वितीय क्षमता है।** आपकी बुद्धि कम्प्यूटर के समान तीव्र है। आप यज्ञ के भवनों की सम्भाल करते हुए सभी समर्पित बहनों एवं भाइयों की हर आवश्यकता का पूरा ध्यान रखती हैं।

आप मैनेजमेंट कमेटी और राजयोगा एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन की सदस्या हैं। आप यज्ञ की हर छोटी-बड़ी चीज का ध्यान रखते हुए सबको संतुष्ट कर अपनी अथक सेवायें दे रही हैं। **इसी कारण आपको सभी भाई-बहलें 'मुन्नी दीदी' कहकर पुकारते हैं।**